नवोदय टाइम्स

कटिंग एवं टेलरिंग में करियर

कटिंग एवं टेलरिंग एक ऐसा काम है, जिसमें 10 रुपए का धागा, बटन, 200 तक की कमाई का जरिया बनता है। यह दौर जा चुका है जब युवाओं के सामने रोजगार का संकट था। आज के दौर में भले ही किसी को नौकरी न मिले, लेकिन स्वरोजगार के दरवाजे हर किसी के लिए खुले हैं। आधुनिकीकरण ने इन स्वरोजगारों को जिस तरह बढ़ावा दिया है, उससे अब यह संकट भी नहीं रह गया है कि काम चलेगा या नहीं। अनेक क्षेत्रों में उठते और नाम कमाते उद्यमियों को देखकर युवाओं में अब यह भावना भी नहीं रही कि पेशेगत काम को ही वे स्वरोजगार बनाएं। यही कारण है कि अब हर क्षेत्र में पेशे से जुड़े और परंपरागत लोग ही नहीं बल्कि अन्य लोग भी भविष्य तलाशते नजर आ रहे हैं। कटिंग एवं टेलरिंग इन्हीं में से एक है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत सैल्फ इम्प्ल्यॉड टेलरिंग के अंतर्गत स्किल्ड होकर आप अपना करियर बना सकते हैं। यह कोर्स भारत सरकार अपने खर्च पर करवाती है। कोर्स सफलतापूर्वक करने के बाद स्किल सर्टीफिकेट व स्किल कार्ड भारत सरकार द्वारा मिलता है जो पूरे देश में मान्यता प्राप्त है। स्किल सर्टीफिकेट मिलने के बाद अभ्यर्थी मुद्रा लोन के लिए भी अप्लाई कर सकता है और लोन लेकर अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू कर सकता है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत यह ट्रेनिंग अपेरल मेड-अप व होम फर्निशिंग सैक्टर स्किल काऊंसिल के देश भर में फैले ट्रेनिंग पार्टनर नैटवर्क से कहीं से भी की जा सकती है।

योग्यता:- कटिंग एवं टेलरिंग का कोर्स करने के लिए शिक्षा का कोई निर्धारित मापदंड नहीं है। अगर आप 8वीं या 10वीं पास भी हैं तो इस क्षेत्र में आसानी से अपना करियर बना सकते हैं। अपेरल, खादी एवं ग्रामोद्योग केन्द्रों में केवल हिन्दी जानने वाले अभ्यर्थी ही प्रवेश पा सकते हैं। कुछ संस्थान 12वीं पास को ही प्रशिक्षण उपलब्ध कराते हैं। अगर आप कटिंग एवं टेलरिंग के साथ डिजाइनिंग का कोर्स भी करना चाहते हैं तो कुछ संस्थानों में यह सुविधा भी मौजूद है। इसके लिए अभ्यर्थी को कम से कम 12वीं पास होना चाहिए। कहीं-कहीं न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता स्नातक की मांग की जाती है।

कोर्स की अवधि : कोर्स की अवधि भी सभी संस्थानों में अलग-अलग है। अधिकतर संस्थानों में तीन महीनों से दो साल तक के कोर्स कराए जाते हैं। दो साल के कोर्स में कटिंग एवं टेलरिंग के साथ डिजाइनिंग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

फीस : सभी संस्थान अपने द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं, कोर्स की अवधि और प्रबंधन के मानदंड के आधार पर ही फीस वसूलते हैं। खादी एवं ग्रामोद्योग में सामान्य अभ्यर्थियों से 100 रुपए के प्रॉस्पैक्टस के अलावा 200 रुपए महीने फीस ली जाती है, जबकि महिलाओं, विकलांगों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के लोगों से कोई फीस नहीं ली जाती। रॉ मैटीरियल प्रशिक्षणार्थी को अपने पास से लाना होता है। प्राइवेट संस्थानों में एक हजार से 15 हजार रुपए तक की फीस ली जाती है।

मशीनें व अन्य जरूरी चीजें

काम शुरू करने के लिए चार अलग-अलग मशीनों की जरूरत पड़ेगी। इसमें सिलाई मशीन, पीको मशीन, इंटरलॉक मशीन और एम्ब्रॉयडरी यानी कढ़ाई मशीन आदि शामिल है। इन मशीनों के अलावा इस काम में इंची टेप, कैंची, टेलर चॉक, प्रैस और धागे की जरूरत होती है।

शिक्षा के पेपर या कटिंग एवं टेलरिंग का सर्टीफिकेट या दोनों मांगे जा सकते हैं। साथ ही आपको स्थायी पता व आई डी प्रूफ की भी जरूरत पड़ेगी। अगर आपने अपेरल एवं खादी ग्रामोद्योग से प्रशिक्षण प्राप्त किया है तो आप प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत सर्टिफिकेट पर लोन ले सकते हैं। इसके लिए एस.सी./एस.टी./ महिलाओं/अल्पसंख्यकों को ग्रामीण क्षेत्र के लिए 35 प्रतिशत और शहरी क्षेत्र के लिए 25 प्रतिशत की छूट मिलती है, जबकि अन्य को ग्रामीण क्षेत्र में 25 प्रतिशत व शहरी क्षेत्र में 15 प्रतिशत छूट का प्रावधान है। इसमें अधिकतम लोन की सीमा 25 लाख रुपए है।

बेहतर करियर के लिए : इस क्षेत्र में अगर आप बेहतर करियर बनाना चाहते हैं तो आपको कटिंग एवं टेलरिंग के साथ डिजाइनिंग की जानकारी यानी आर्ट का सही ज्ञान होना चाहिए। इसके साथ ही आपको बाजार में आ रहे कपड़ों के नए-नए डिजाइन की जानकारी और उन्हें तैयार करने का हुनर भी आना चाहिए।

प्रमुख संस्थान

- अपेरल मेड-अप व होम फर्निशिंग सैक्टर स्किल काऊंसिल प्रथम तल, सैक्टर-6, आर.के पुरम, काम कोटि मार्ग, नई दिल्ली
- आसीमा पॉलीटैक्नीक इंस्टीच्यूट
- आचार्य सुशील आश्रम, शंकर रोड, नई दिल्ली।
- इंदिरा गांधी पॉलीटैक्नीक फॉर वुमन 6/97 डी.डी.ए. फ्लैट, मेन मदनगिरी, नई दिल्ली।

—डा. रूपक वशिष्ठ